द्वितीय अध्याय
सम्भिन्धित साहित्य का सर्वश्रेष्ठ:—

व्यवहारिक रूप में हम समस्त मानवीय ज्ञान को पुस्तकों एवं पुस्तकालय से प्राप्त कर सकते हैं। मनुष्य के अलावा जिन भी पशु है वे सभी अपनी वंश की नयी उत्पत्ति के साथ ही एक नया अध्ययन प्रारम्भ करते हैं परन्तु अपने बीते हुए कल के अनुभवों, एवं ज्ञान का संकलन करता है तथा इस अर्गीत पूर्वज्ञान का संग्रहीत कर पुस्तकों एवं पुस्तकालयों में सुरक्षित कर देता है। जानें लेखा।

सम्भिन्धित साहित्य का महत्त्व:—

किसी भी शोध के मूल तक जाने के लिये सम्भिन्धित विषय का सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त करना अत्यन्त आवश्यक है क्योंकि जब तक शोधकर्ता पुस्तकालयों एवं अन्य स्रोतों से सम्भिन्धित शोध के बारे में पूरी जानकारी प्राप्त नहीं कर लेता है तब तक उसका शोध अद्वैत एवं अपरिष्कृत हो रहेगा। यदिपि किसी भी विषय से सम्भिन्धित साहित्य का एकत्र करना काफी समय लेता है परन्तु इससे अत्यन्त फलदायक उपलब्धियां प्राप्त होती है क्योंकि शोधकर्ता के पास एकान्त यही रहता है जिससे वह जात करता है कि उससे सम्भिन्धित शोध के बारे में अन्य शोधकर्ताओं कहां तक सफलता प्राप्त कर चुके हैं तथा उनका कितना लाभ समाज अथवा शिक्षा जगत को हुआ है।

किसी भी विषय के लिये उससे सम्भिन्धित साहित्य का सर्वश्रेष्ठ करते समय निम्नलिखित उद्देश्यों को ध्यान में रखना अत्यन्त आवश्यक है।

1. किसी भी शोध से सम्भिन्धित साहित्य का सर्वश्रेष्ठ करने पर यह जानकारी हो जाती है कि इससे पूर्व इस समस्ता को हल तो नहीं किया जा चुका है अथवा निस्क्रिय क्षेत्र में इसे प्रयोग में लाया गया है जब अन्य क्षेत्रों से किस प्रकार भिन्न है, इस प्रकार किसी शोध
समस्या की पुनरावृत्ति नहीं हो पाती है।

2.- किसी भी साहित्य का अल्पकाल करने पर नये विचारों परिलक्षित तथा महत्वपूर्ण सिद्धांतों एवं सूत्रों की जानकारी प्राप्त हो जाती है जो शोध समस्या के हल करने में सहायक होती है।

3.- इससे शोध हेतु उपयुक्त विधि का चयन करने में सहायता प्राप्त होती है।

4.- इससे पूर्व में किये गये शोध में प्रयुक्त आंकों से वर्तमान शोध के आंकों में तुलनात्मक रूप से अध्ययन करने में सुविधा हो जाती है।

5.- इससे शोधकर्ता को अपने शोधकार्य को आये बढ़ाने में काफी प्रोत्साहन प्राप्त होता है।

उपरोक्त सभी उद्देश्यों को ध्यान में रखकर शोधकर्ता ने प्रस्तुत शोध हेतु सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण किया जिनमें कुछ प्रमुख शोध निम्न हैं।

भारत वर्ष में किये गये शोधों पर एक श्रृंखला:-

**** कुलसेष्ट, एस.जे.के. 30 || 1956 || ए स्टडी ऑफ इटेलीजेंट एण्ड एकोलॉजिकल एटेन्मेंट्स ऑफ़ कलास X एण्ड 11 वें वर्ग स्टूडेंट्स इल यू.पी."

उद्देश्य :- बुढ़ि का मापन तथा तथा ग्रामीण एवं नगरीय जनता पर इस का प्रभाव।

न्यायाधिकरण:- कक्षा 10 तथा कक्षा 11 के 1520 विद्यार्थी तथा 22 स्कूल और इंटर केलेज।

उपकरण:-

पुस्तक:- बुढ़ि परीक्षण- ग्रुप परीक्षण- नाम बरकल, जलोटा ग्रुप टेस्ट (सामान्य बुढ़ि परीक्षण)

उपलब्धि:-

सामान्यता: बुढ़ि परीक्षण से प्राप्त अंक विषयों में प्राप्त अंकों से प्राप्त अंकों का सह सम्बन्ध बहुत कम था। कुछ विषयों में प्राप्त अंक तथा सामान्य बुढ़ि परीक्षण में प्राप्त अंकों में आपसी सह सम्बन्ध इतना अधिक है कि उनका कोई ( प्रिभिदित ) मूल्य नहीं था।

[[2]] परेलो के. 52 (1967)
१) स्मृति, भाषा पर प्रभाव तथा तर्कशक्ति को प्रभावित करने वाले तत्वों के बारे में जानकारी प्राप्त करना।

२) स्मृति के कारकों तथा भाषाई कारकों के बीच सम्बन्ध ज्ञात करना।

३) विद्यालय की उपलब्धता में भाषा, कारकों तथा स्मृति के प्रभाव तथा उनकी उपलब्धि का अध्ययन करना।

न्यायदीन :-

367 बालक, 198 बालिकाएं जो कक्षा 10 में अनुमति सिया है तथा 18 अंग्रेज़ी माध्यम से शिक्षण करने वाले विद्यार्थी।

उपकरण :-

भाषाई उपलब्धि जात करने हेतु 1960 'पुनरावलोकन सहयोगी अंग्रेज़ी परीक्षण का फार्म 2 2' भारतीय संसदकी संस्थान द्वारा प्रकाशित 'फेन्टोरियल' तारीख परीक्षण का प्रयोग स्मृति के कारकों को जानने हेतु किया गया। वैसलर स्मृति परीक्षण का फार्म 'टी' का प्रयोग स्मृति के मापन हेतु किया गया।

1- बालक एवं बालिकाओं दोनों की स्मृति तथा मौखिक तारिक को पूरे विद्यालय की उपलब्धता के परिप्रेक्ष्य में मूल्यांकन किया गया।

2- अंग्रेज़ी विषय में बालक एवं बालिकाओं का स्मृति तथा मौखिक तारिक को पारंपरिक सहयोग का अध्ययन करने हेतु 'आधुनिक अंग्रेज़ी परीक्षण' का प्रयोग किया गया।
उद्देश्य :-

1- महाविद्यालयीय छात्रों का शिक्षा के प्रति आपस में उल्लेखनीय अन्तर के बारे में जानकारी प्राप्त करना।

2- विषयविश्वास स्तर पर पढ़ाई जाने विषयों के बारे में अभिभावकों के उल्लेखनीय व्यवहार तथा उद्देश्यो का अध्ययन करना।

न्यायाधिकृत:-

बिहार विश्व विद्यालय से सम्बन्ध विभिन्न महाविद्यालयों के लगभग 200 महाविद्यालीय विद्यार्थियों को {छात्र एवं छात्राओं} चुना गया जिनकी उम्र 18 से 25 वर्ष के बीच थी।

उपकरण:-

स्क्रिप्ट समान पंच पदों {फाइव प्लान्टिंग्स} स्केल का निर्माण किया। विद्यार्थियों आर्थिक एवं शैक्षिक स्तर की मापन हेतु भी एक विशेष तैयारी की गयी।

परिणाम:-

महाविद्यालीय विद्यार्थियों का कालेज स्तर की शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण पाया गया।

उद्देश्य:

मेसूर के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में निवास करने वाले अनुसूचित जाति के लोगों की जैसिक समस्याओं का अध्ययन।
स्कूलो में सहभागिता तथा प्रदर्शन किस प्रकार अनुभूति जाति के विद्यार्थियों को शैक्षिक वातावरण, माता-पिता के दृष्टिकोण और जाति वर्ग से प्रभावित करता है।

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में अनुभूति जाति के विद्यार्थियों की सामाजिक दशा में परस्पर कोई विपरीतकारण पाया जाता है या नहीं।

न्यायदर्शी:

कुल न्यायदर्श 3079 चारागार से चयनित किया गया तथा 820 तीन गाँवों से चयनित किये गये।

निष्कर्ष:

शोध ग्रन्थ से निम्न दो विनिमयों पर निष्कर्ष निकाला गया।

1. विद्यालय में सहभागिता
2. विद्यालय में प्रदर्शन (प्रकार्यभार)

रस्तोगी, केतनघो 1969, "ए स्टडी ऑफ दि रिलेशन विटवन इन्टेलिजेंस, इन्ट्रेस्ट एंड एचीवमेंट ऑफ दि हाई स्कूल स्टूडेंट्स"

उद्देश्य:

हाईस्कूल कक्षाओं में विज्ञान तथा अंग्रेजी पढ़ने वाले छात्रों की बुद्धि, लघु एवं उपलब्धि में पारंपरिक सम्बन्ध का आध्यात्म करना।

न्यायदर्शी:

1. कक्षा 10 के ऐसे 1600 विद्यार्थियों का चयन 16 विद्यालयों से किया गया जिनके सौच अंग्रेजी पढ़ने में थी।
2. ऐसे ही 1626 विज्ञान के विद्यार्थियों का चयन उपरोक्त विद्यालयों एवं कक्षाओं से किया गया।
3- पारस्परिक सम्बन्ध जात करने हेतु 560 विद्यार्थियों का चयन किया गया।

विशेषता:

1- बुद्धि भापन हेतु जलोटा सामान्य बुद्धि परीक्षण का प्रयोग किया गया।
2- उपलब्ध परीक्षण हेतु यूपीआर बोर्ड की परीक्षाओं के आंकड़े लिये गये।

निष्कर्ष:

1- विशाल विषय के छात्रों में बुद्धि एवं उपलब्धि में धनात्मक वृद्धावधान पाया गया।
2- अंग्रेजी तथा विशाल दोनों ही विषयों के छात्रों में बुद्धि एवं रचन में लगभग एक ही सह सम्बन्ध पाया गया।
3- बुद्धि एवं रचन में पारस्परिक सम्बन्ध अधिक पाया गया जबकि उपलब्धि के बीच इन का पारस्परिक सम्बन्ध कम था।


उद्देश्य:

शोधकर्ता पूर्वी उप्रएलों में पाये जाने वाले पौर्व वर्ग, सामाजिक वर्ग, उच्च मध्य सामाजिक वर्ग, निम्न मध्य सामाजिक वर्ग, उच्च निम्न सामाजिक वर्ग तथा निम्न सामाजिक वर्ग के सामान्य मानसिक दक्षता परीक्षण पर आधारित था।

न्यायादेश:

800 ऐसे छात्रों का चयन किया गया जो कक्षा 8 से लेकर स्नातक स्तर की कक्षाओं से पूर्व की कक्षाओं में अध्ययन कर रहे थे।

उपकरण:

सामाजिक वर्गों के पूर्वांकन हेतु शोधकर्ता द्वारा एक मापन का निर्माण किया गया तथा
जलोटा सामूहिक मानसिक दंशता मापनी का प्रयोग किया गया।

निष्कर्ष:-

1- प्रत्येक वर्ष, अन्य वर्ग की मानसिक दंशता में प्राप्त अंकों से मिलन पाया गया।

2- उच्च सामाजिक वर्ग के छात्र ने विभिन्न मानसिक दंशता परिप्रेक्षण में अन्य वर्ग की अपेक्षा अधिक अंक प्राप्त किये।

3- उक्त एवं शिक्षा के अनुसार विभिन्न वर्ग के विद्यार्थियों में सामान्य मानसिक दंशता में आपस में बहुत कम अंतर पाया गया।

राजनीति शिक्षा महाविद्यालय जबलपुर 23 1971। "ए स्टडी ऑफ स्टूडेंट्स स्टीच्यूट ट्राइंस।

टीचर्स विदु डार्टर्क एण्ड इन्डारेन्ट एनबाबुसन्स इन जबलपुर।"

उद्देश्य :-

1- इस शोधकार्य का उद्देश्य यह ज्ञात करना था कि क्या छात्र ऐसे अध्यापकों को पसन्द करते हैं जो प्रत्यक्ष रूप से इन्हें प्रभावित करते हैं।

2- क्या छात्र ऐसे अध्यापकों को नापसंद करते हैं, जो प्रत्यक्ष रूप से उन्हें प्रभावित करते हैं?

न्यायर्थ:-

ऐसे 78 अध्यापकों/अध्यापिकाओं को न्यायर्थ हेतु चुना गया जो प्रशिक्षित तथा अप्रशिक्षित दोनों में तथा विज्ञान, भाषा एवं सामाजिक विज्ञान आदि विषयों का शिक्षण कर रहे थे। इस बात का विषय ध्यान रखना गया था कि यह सभी अध्यापक/अध्यापिकाओं कम से कम तीन वर्ष का अध्यापन अनुभव अवस्था रखते हैं। यह शिक्षक 17 छात्र एवं छात्राओं का प्रतिनिधित्व करते थे जो विभिन्न प्रकार की शिक्षण संस्थाओं जैसे राजकिय, अर्ध राजकिय तथा निजी शैक्षिक संस्थाओं द्वारा संचालित थे।
उपकरण:

1. विद्यार्थियों की अभिलिप कामन हेतु एक प्रस्तावली का निर्माण किया गया।

2. अध्यापकों के प्रभाव को नापने हेतु 10×10 मैट्रिक्स तथा एक मास्टर मैट्रिक्स का निर्माण किया गया था।

निःस्करण:

1. सामान्य रूप से यह पाया गया कि विद्यार्थी ने ऐसे शिक्षकों को ज्यादा पसन्द किया जो अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते थे।

2. ऐसे शिक्षकों सामान्यतः नापसंद किया गया जो प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते थे।

8. मुम्बई, शी.शी. 49 (1972): "रोड्सट्रॉय ने विल्यम्स एनोर्डन एन ओप्रोन" - एलाक्सस ऑफ विल्यम्स इस ए डिफेंसमेंट ब्लाक इन हेडरवायर डिस्ट्रिक्ट"

उद्देश्य:

शोधकर्ता द्वारा यह शोध श्रमिक लोगों का छोटे बच्चों की शिक्षा के प्रति अभिलिपि जानने हेतु किया गया।

न्यायालय:

कुल 342 लोगों को चुना गया जिनमें 42 लोग निम्न आय वर्ग, 251 मध्यम आय वर्ग तथा 49 लोग उच्च आय वर्ग से चुने गये थे।

कुल उत्तरदाता 684 थे जिनमें 342 पुरुष तथा 342 महिलाएं थीं। उत्तरदाताओं की आय सामान्यतः 31-50 वर्ष के उम्र थी।

विवेचन:

अध्ययनार्थ विद्यार्थियों के अभिमानकों की प्रतिक्रिया की व्याख्या हेतु छः प्रश्न का
चयन किया गया। प्रश्नों का उत्तर हाई/नहीं के आधार पर रिकार्ड किया गया। ऑफ़िस में विभेदीकरण हेतु प्रतिष्ठान, कई स्टेडियर आदि की गणना की गयी।

निष्कर्ष:-

1- ऐसे 53.7% व्यक्ति थे जो बच्चों को 5 वर्ष की उम्र में विद्यालय भेजे जाने पर सहमत थे जिनमें 61.18% पुरुष तथा 46.2% महिलायें थीं।

2- 66.18% उत्तरदाता ऐसे थे जिनकी दृष्टि में उन्होंने बच्चों को शिक्षा दी जानी चाहिये जिनके माता-पिता धनवान हैं। इस दृष्टिकोण में पुरुष तथा महिला दोनों ही बड़ी संख्या में शामिल थे परन्तु रिटर्न का प्रतिशत 72.2 था जो पुरुषों से अधिक था।

3- पुरुष एवं महिला दोनों ही उत्तरदाता इस बात पर सहमत थे कि महिलाओं की शिक्षा पर खर्च की जाने वाली धनराशि व्यर्थ नहीं जाती। इस प्रश्न के पक्ष में 64.3% उत्तरदाता थे जिनमें 35.1% महिलायें तथा शेष पुरुष थे।

4- एक बड़ी संख्या में उत्तरदाता इस बात पर सहमत थे कि इतनी उच्च शिक्षा महिलाओं को नहीं दी जानी चाहिए जितनी कि पुरुषों को दी जाती है। यथापर्वत इस के पक्ष में स्त्री और पुरुष दोनों ही मतदाता शामिल थे परन्तु रिटर्न का प्रतिशत 59% तथा पुरुषों का 52.4% था जबकि दोनों का सम्मिलित प्रतिशत 55.8 था।

5- 49.8% उत्तरदाता इस पक्ष में थे कि महिलाओं को शिक्षा के क्षेत्र में हेप दृष्टि से नहीं देखा जाना चाहिए।

6- ऐसे मत व्यक्त करते वाले लोगों की संख्या अत्यधिक अर्थात 65.2% थी जो बालिकाओं के वौनकल्यास में प्रवेश करने के बाद स्कूल न भेजे जाने के पक्ष में थे क्योंकि इस स्थिति में विवाह होने की सम्भावना अधिक है।

7- ऐसे महिला उत्तरदाताओं की संख्या लगभग 74% थी जो इस बात से सहमत थी कि परिपूर्त होने के बाद किसी भी दशा में बालिका को विद्यालय न भेजा जाये। इस मत
के पक्ष में लगभग 69.3% पुरुष थे जबकि कुल प्रतिशत 71.6 था।

1972: के द्वारा, "इन्टरनेशनल एण्ड अन्दर कार्यानिष्ठ भ्रमण प्रैक्टिसेन्स ऑफ जीयूस ऑफ चिल्ड्रेन इन उड़ीशा विलोकन दू पक्ष काहूस, ड्राइवर्स चिल्ड्रेन" रेडिंग टू गैंडर इन दि सेम क्लास।"

निष्कर्ष: -

प्रस्तुत शोध में यह निष्कर्ष निकाला गया कि ब्राह्मण छात्रों ने सबसे अधिक अंक प्राप्त किये उसके बाद अनुसूचित जन जाति तथा सबसे कम अंक अनुसूचित जाति के छात्रों ने प्राप्त किये।

सभी विषयों में इन छात्रों का प्रदर्शण अत्यन्त ही निम्न स्तर का रहा।

1974: "एनकेकैशनल प्रब्लम्स ऑफ स्ट्रूक्चर्क क्राफ्ट एण्ड स्ट्रूक्चर्ड ट्राइव इन तामिलनाडू।"

उद्देश्य: -

1. अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की समस्याओं के प्रकार तथा उल्ल्नी अधिकार के बारे में विश्वसनीय एवं संगठित पूर्ण जानकारी जात करना।

2. सरकार द्वारा अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों को दी जाने वाली सहायता का उद्देश्यपूर्ण मूल्यांकन।

3. ऐसे उपयुक्त सुझाव प्रस्तुत करना जो अच्छे हो तथा जल्दी अच्छे परिणाम दे सकते हो, का वर्तमान नीतियों के परिप्रेक्ष्य में जानकारी क्रियान्वित करने पर जोर देना।

न्यायाधिकरण: -

न्यायाधिकरण के रूप में 1027 विद्यार्थियों का चयन 40 सदस्यों से किया गया जिनमें से दो-दो सिद्धाय, कार्यालय अनुसूचित जाति, जनजाति के जनपदों से लिये गये। निम्न लिखित चार
विन्दुओ पर न्यायार्थ विभाजित किया -

1- 232 अनुसूचित जाति के स्कूली विद्यार्थी, 69 सामान्य जाति के विद्यार्थी तथा 50 प्रधानाध्यापक एवं अध्यापक।

2- 187 अनुसूचित जाति के कालेज विद्यार्थी तथा 53 सामान्य जाति के विद्यार्थी, 70 प्रधानाध्यापक एवं प्रवक्ता।

3- 174 अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थी तथा 51 सामान्य जाति के विद्यार्थी एवं 48 प्रधानाध्यापक एवं अध्यापक।

4- 47 अनुसूचित जनजाति के कालेज विद्यार्थी तथा 16 सामान्य वर्ग के विद्यार्थी एवं 30 प्रधानाध्यापक एवं प्रवक्ता।

स्कूली विद्यार्थियों का चयन कक्षा 9 तथा कक्षा 11 से तथा कालेज विद्यार्थी श्री.ए./श्री.एस.श्री./श्री.काम द्वितीय तथा द्वितीय वर्ष की कक्षाओं से स्थापित किये गयें।

शोध संपर्क:-

आंकड़ो का एकमात्र, प्रशासकी साक्षात्कार, राजकीय कार्यालयों के रिकार्ड से तथा स्थानीय नर्तक का शिक्षा विभाग के कार्यालयों तथा स्कूलों के प्रधानाध्यापकों एवं कालेजों के प्रधानाध्यापकों से प्राप्त की गयी।

निष्कर्ष:-

1- अनुसूचित जाति के लोगों को साक्षात्कार 1971 में 26.00 थी जो वर्ष 1993 में

2- प्राथमिक स्तर पर अपका बदल अधिक था परन्तु मिश्रित स्तर पर अनुसूचित जाति के छात्र सामान्य स्तर के छात्रों से लगभग बराबर थे।

3- अधिकांश विद्यार्थी ऐसे परिवारों से आये थे जो पढ़े लिखे नहीं थे तथा अधिक तंगी का जीवन जीता रहे थे। यह प्रतिस्पर्धा क्रमशः 67.22 एवं 90.5 था। यह छात्र
केवल 3-4 घण्टे ही अध्ययन करते थे, किसी वाह्य क्रियाओं में भाग नहीं लेते थे तथा पादयुग को समझने में कठिनाई महसूस करते थे।

4- 78.5% लोग ऐसे थे जो इस मत के समर्थन में थे कि अनुसूचित जाति के लोगों के स्तर में कोई सुधार नहीं हुआ है।

5- अनुसूचित जाति की लड़कियां, अधिकतर कला वर्ग की विदालियों थीं तथा उन्हें शिक्षण में किसी प्रकार की कोई कठिनाई नहीं होती थी।

बिन्दू आर 12 ए 1974, "प्रोफेसर ऑफ एजुकेशन ऑफ शिवजुल्ला काम्ब्रिज इन उत्तर प्रदेश।"

लक्ष्य:

1- अनुसूचित जाति के लोगों की साक्षरता एवं शिक्षा की प्रगति का अध्ययन विशेष रूप से स्वतंत्रता के बाद गठित विभिन्न पंच वर्षीय योजनाओं में।

2- अनुसूचित जाति एवं सामान्य वर्ग के लोगों के बीच शैक्षिक विकास की गति का तुलनात्मक अध्ययन।

3- विभिन्न मंडलों एवं जिलों के अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों का अलग अलग शैक्षिक विकास का अध्ययन।

4- अनुसूचित जाति के लोगों के लिए सरकार द्वारा क्रियान्वित विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं का उनकी शिक्षा पर प्रभाव।

शोध विधि:

ऐतिहासिक एवं वितरणात्मक दोनों ही पद्धतियाँ का संयुक्त रूप से प्रयोग किया गया।

औंक़ड़ों का एकान्तकरण:

शोध हेतु औंक़ड़ों का संकीर्णकरण सम्बन्धित कार्यालयों के अभिलेखों तथा सरकार द्वारा
प्रकाशित विभिन्न पत्र पत्रिकाओं से किया गया।

निष्कर्ष:-

1- उत्तरप्रो के अनुसूचित जाति वाले सात्तर, लोगों का प्रतिशत अन्य राज्यों से बहुत कम था।

2- अनुसूचित जाति की कल्याणकारी मोजनाओं पर खोर्स किये जाने वाली धनराशि उत्तरप्रो में अन्य राज्यों की तुलना में बहुत कम थी।

3- उत्तरप्रो में निवास करने वाले अनुसूचित जाति के लोगों के मध्य सामान्य रूप से लोकप्रिय नहीं थी।

4- उत्तरप्रो स्तर की शिक्षा में अधिक लोकप्रिय नहीं थी।

5- माध्यमिक स्तर की शिक्षा अंतर के अनुसूचित जाति के लोगों का प्रारंभिक बहुत न्यून था।

उद्देश्य :-

कला एवं विज्ञान दोनों वर्गों के किशोरों का प्रारंभिक किशोरावस्था में व्यवस्थापन, औषधिक प्रभावी एवं ग्रामीण स्तर मानसिक स्तर पर प्रभाव का अध्ययन।

इस्तेमाल:-

तरह से पंद्रह वर्ष तथा सोलह से अटार वर्ष की आयु के 800 विद्यार्थियों का चयन किया जायेगा।
उपकरण:

1. माइले व्यक्तित्व मापनी।
2. सामान्य बुद्धि परीक्षण का जलोटा परीक्षण।
3. आई. पी.ए. टी. हाईस्कूल व्यक्तित्व समन्वय प्रश्नपत्री।

निष्कर्ष:

1. व्यक्तित्व के आधार पर उच्च उपलब्धि समूह तथा कम उपलब्धि समूह में काफी भिन्नता पायी गयी।
2. कला वर्ग के विद्यार्थियों का धौलिक स्तर तथा भावनात्मक स्तरता विज्ञान वृत्त के छात्रों की प्रोफ़ेशनल अवस्था अत्यंत न्यून था।
3. किशोर विद्यार्थियों की वैज्ञानिक उपलब्धि नगर के और ग्रामीण क्षेत्र के अनुसार असामान्य थी।
4. कला वर्ग में उच्च उपलब्धि वर्ग छात्रों की आधारभूत पुरस्कृति उच्च वैज्ञानिक उपलब्धि हेतु अत्यंत उपयुक्त पाया गया जबकि ग्रामीण गृह समूह पिछड़के का कारण मुख्य कारण रहा।

उद्देश्य:

पंजाब में अनुमोदित जाति के लोगों का सामाजिक, आर्थिक स्तर की जानकारी करने हेतु शोधकर्ता इस शोध में काफी प्रयास किया। इस हेतु स्कूली गतिविधि, सामाजिक दूरी के प्रति उनका ड्रिफ्टकोण, उन्हें प्रान्त सुलभियों में उनकी राय जानकर यह जानने का प्रयास किया जायेगा कि
उन्हें शैक्षिक उपलब्धि में क्या क्या समस्त्यां आती है।

न्यायिक:

पंजाब के 20 स्कूलों से 254 विद्यार्थियों का चयन किया गया।

शोध सिद्धि:

प्रश्नावली एवं साफ़साफ़ द्वारा ऑफ़कड़ों का एकमात्रकरण किया गया।

निष्कर्ष:

1- अनुमूलित जाति के छात्रों द्वारा कक्षाओं में उपस्थित होकर अपनी जिज्ञासा तथा उत्सुकता प्रदर्शित करने के साथ-साथ अधिक से अधिक समय अध्ययन हेतु दिया गया। इस्सी नौकरी हेतु उनकी आकांक्षा भी तीव्र थी परन्तु अध्ययन को बीच में छोड़कर वाले छात्रों का प्रतिशत अत्यन्त अधिक था।

2- इन छात्रों का शैक्षिक स्तर उनके अभ्यासों की आकांक्षा से कम पाया गया।

3- पाठ्य साधारण किया जा सकता है उनका योगदान अत्यन्त न्यून था।

4- जाटाएं म्रेणे वो भी प्रकार अन्य विद्यार्थियों से सम्बन्ध स्थापित करने में आड़े नहीं आया।

5- इस जाति के छात्रों ने यह अनुभव किया कि, अर्थिक, सामाजिक और शैक्षिक स्तर का अत्यधिक महत्व है और उनका प्रभाव किसी भी नौकरी पर पहला है।

6- लगभग 60% विद्यार्थियों ने यह अनुभव किया कि उनकी दशा में काफी सुधार हुआ है परन्तु उनका स्तर अन्य वर्गों की अपेक्षा अभी भी निम्न है।

7- इस वर्ग के छात्रों से अधिकांश को सरकार द्वारा प्रदत्त सुविधाओं की जानकारी नहीं थी और जिन्हें थी भी उनमें से अधिकांश छात्रों ने इस सुविधा का लाभ नहीं उठाया।
विद्यालयों में अध्ययनरत अनुसूचित जानिए तथा जनजाति के छात्रों का अध्ययन करना।"

उद्देश्य:

शौचकर्ता का अनुसूचित जानिए तथा अनुसूचित जनजाति के छात्रों के सामाजिक, आर्थिक स्तर, विद्यालय में उनकी कार्यक्षमता, समाज के प्रांत उनका घराप्तक्षण तथा उनकी प्रगति में बाधक समस्याओं के बारे में अध्ययन किया गया।

न्यायाधिकार:

240 विद्यालय, 10 विद्यालय से 04 शिक्षक

उपकरण - साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग ऑफिस के प्रकाशकरण के लिए किया गया।

निष्कर्ष:

1.
बालिकाओं की शिक्षा की स्थिति अत्यन्त दयनीय स्थिति में थी। 240 विद्यालयों में से केवल 15 बालिका विद्यायी थी।

2.
सामाजिक-आर्थिक स्तर विपरीत होने के बावजूद विद्यार्थियों का एक बड़े समूह ने अध्ययन के क्षेत्र में काफी अच्छा प्रदर्शन किया। ऐसे विद्यार्थियों ने कुछ में पढ़ाई गयी पाठों में किसी प्रकार की कोई कठिनाई अनुभव नहीं की।

3.
सामाजिक-स्तर शिक्षक-छात्रों के आपसी सम्बन्धों में किसी-पक्ष का अंतर्गत नहीं बना।

4.
कुछ छात्रों ने १५ श्रेणी ने बताया कि उनकी जानिए के लिये विभेदक रूप से चलाये जा रहे विभिन्न कार्यक्रमों से उनके आत्म सम्मान को उन्हें प्रदर्शन की जाने वाली पुण्यितां लेने से उनके आत्म सम्मान को आत्मत  पुरूषत्व है।
5. लगभग 63% अध्यापकों द्वारा यह अनुभव किया गया कि अनुसूचित जातियों के छात्रों की बुद्धि का स्तर, सामान्य जाति वर्ग के छात्रों की तुलना में कम था।

एस. चित्रेश - 1974

महाराष्ट्र के विद्यालयालय स्तर के अनुसूचित जाति तथा जनजाति के विद्यार्थियों की शोधक्षेत्र समस्याओं का अध्ययन।

उद्देश्य:

अनुसूचित जाति तथा जनजाति के विद्यार्थियों के विषयन्त्र क्रियाकलापों में सहभागिता का सामान्य जाति वर्ग से तुलनात्मक अध्ययन करना।

न्यायाधिकृत:

महाराष्ट्र के 5 जिलों के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों को चुना गया।

निश्चय:

1. अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के विषयन्त्र आधुनिक वर्ग तथा विषयन्त्र लेखों के उत्तरदाताओं में बहुत कम भिन्नता पायी गयी।

2. अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति दोनों ही जाति के विद्यार्थियों ने पाठ्य सहायक क्रियाओं में कोई खंभे प्रदर्शित नहीं की परन्तु पढ़ने तथा व्यवसाय के प्रति उनकी खंभे अत्यधिक थी।

3. अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति दोनों के ही विद्यार्थियों ने सरकारी सुविधाओं के प्रति नाराज गी प्रदर्शित की।

4. दोनों ही जातियों के विद्यार्थियों द्वारा सभी विध्यालयों के सामने विचार व्यक्त करने के प्रति आंदोलन व्यक्त की।
5- शिक्षकों के अनुसार अनुमोदित जाने और अनुमोदित जनजाति अर्थे ये परभ अन्य विद्यार्थियों की तुलना में गरीब थे।

नवपुक अन्यायका का इन जातिवर्ग के विद्यार्थियों के प्राप्ते रूपया नरम नहीं था व्यक्ति उन्हें जो सुनिश्चित उपलब्ध है उसके अनुसार उनकी उपलब्धता नहीं थी।

16 सूद, जेके. "76" [1974]

-----------------------------
‘ए लंडन आफ एरिट्रियजर ट्यूटर्स साइन्स एण्ड साइंटिस्ट एमन्स ऑफराइज ग्रुप ऑफ रस्ट्रेंट्स एण्ड टीरिस्ट इन इंगलिश’

उद्देश्य-

-----------
बालक एवं बालिकाओं तथा शिक्षक, शिक्षकाओं का विज्ञान विषय के प्राप्ते अभ्यास से जानने के उद्देश्य से एक अभ्यास शामिल का निर्माण करना।

न्यायाधिक-

----------
10,000 विद्यार्थी तथा अन्यायका। विद्यार्थियों का चयन उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर परिवारों से किया गया। केवल ऐसे विद्यार्थियों का ही चयन किया गया जो डिल्ली तथा राजस्थान के अंग्रेजी माध्यम विद्यालय में अध्ययन कर रहे थे। डा. जलोटा द्वारा तैयार की गयी सामाजिक आर्थिक स्तर सम्बन्धी मापनी का प्रयोग किया गया। इसके साथ-साथ विद्यार्थियों द्वारा आर्थिक परीक्षा में जो अंक प्राप्त किये उन्हें भी आंकड़ों के रूप में प्रयोग किया गया।

निष्कर्ष -

-----------
1- ऐसे विद्यार्थियों तथा विज्ञानी शिक्षकों का जो विज्ञान में स्थित रखते हैं की अभ्यासित घनत्व रही।
2- लंग भेद का विज्ञान के विद्यार्थियों तथा विज्ञान के शिक्षकों पर कोई प्रभाव दूरे की नहीं हुआ।

17 अगस्त, बाई.पी.-

------------------------

ए नामक ऑफ लोकल ऑफ कन्ट्रोल एण्ड जनरल इन्टीलिजेंस एमनेंग दि

3 ग्रुप।

उद्देश्य -

1- सामान्य जाति तथा अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का विकास

उपायों पर प्रभाव का अध्ययन करना।

2- दोनों वर्ग के विद्यार्थियों के मध्य सामान्य बुद्धि का अध्ययन करना।

न्यायाधि -

130 अनुसूचित जाति तथा 145 सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों का चयन किया गया।

उपकरण-

केरल कल्वर परीक्षण भिंडी संस्करण का प्रयोग ऑफड्रो के एकजीवन हेतु किया गया।

निष्कर्ष-

अनुसूचित जाति तथा सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों के मध्य बुद्धि समय की परीक्षण करने में यह पाया गया कि सामान्य वर्ग के विद्यार्थी आधिक रैयेंडी थे जबके अनुसूचित जाति कम।

18 नैयाय, पी.के.-वी.।1975।

'दे शिक्षल्डकास्ट एण्ड शिक्षल्ड ट्रायडस हाईस्कूल स्टूडेन्ट्स इन केरल'
उद्देश्य -

1. अनुश्रुत जाति तथा जनजाति के विद्यार्थियों की श्रीकेश विद्यालयों का अध्ययन।

2. अनुश्रुत जाति तथा जनजाति के विद्यार्थियों हेतु सरकारी श्रीकेश नीतियों का
लाभ्यकार।

3. सरकार की वर्तमान नीतियों तथा किया जा रहा विकास के यापन हेतु विशेष उपयोग का पुजारा।

न्यायाधि -

20 विद्यालयों से 243 अनुश्रुत जाति तथा 18 विद्यालयों से 193 अनुश्रुत जनजाति के विद्यार्थियों को चयन किया गया।

नोटक: -

1. अनुश्रुत जाति तथा अनुश्रुत जनजाति के अधिकांश विद्यार्थी अवस्थित थे।
हिन्दू तथा हिंदू जाति के परिवार सबसे अधिक पढ़ तिलबे थे।

2. लगभग 3/4 अनुश्रुत जाति तथा 4/5 अनुश्रुत जनजाति के विद्यार्थी अपने
शिक्षकों द्वारा पढ़ाये जाने वाले विषयों का अनुसरण नहीं कर पा रहे थे।

3. पाठ्यक्रम द्वारा किया गया उनकी भाषाधीनता एक समबंध दायरे में थी। उनके द्वारा
वाद-विवाद प्रकटिका तथा साक्षरता आदि कार्यक्रम में ही वे भाग लेते थे।

4. श्रीकेश आकार के बालक विद्यार्थी उनके पिता की शिक्षा तथा उत्साह चढ़ान पर निर्भर थी।

19. सोनी, श्री. 75 [1975], एजुकेशनल प्रोब्लम्स ऑफ शिक्षा और कास्ट कालेज स्टूडेंट्स
इन्स्टीट्यूट।
उद्देश्य - अनुसूचित जातियों तथा अनुसूचित जनजातियों के विद्यार्थियों की समस्यायें।

न्यायांकन - महाबिद्यालयों में बी.ए., बी.एस.सी. बी.कॉम पाइकर्म हेतु नामांकित विद्यार्थियों के कक्षाओं 9 एवं 10 में अध्यायनरत विद्यार्थियों का चयन भी किया है। जिनमें बालक 95.1% तथा बालिकाएँ 4.81% थे।

निष्कर्ष - प्रशिक्षण 30% में मुख्य रूप से पाये जानी 7 जातियों जिनमें चमार तथा जाटव कालेज स्तर की शिक्षा में अधिक प्रभावी थे तथा उनके बाद बालीक कंकालियों जातियों के विद्यार्थी थे तथा इन सभी का श्रेष्ठतम उनकी आबदनी पर निर्भर कर रहा था।

2- लगभग 50% प्रतिभाशी श्रेष्ठतम रूप से बिछड़े परीक्षारों के थे तथा 90% से 95% परीक्षारों का अन्याय स्तर बहुत न्यून था।

3- लगभग 11.85% प्रतिभाशी किसी न किसी लघु उद्योग तथा 4.48% किसी न किसी रोजगार से सम्बन्ध थे। वे लोग अपने श्रेष्ठ ग्रेड में सुयार हेतु अपना धन-कृतृत प्राप्त करने के उद्देश्य से शिक्षा श्रेष्ठ करते हेतु प्रवेश लिए थे।

बड़े-बड़े संस्थाओं में प्रवेश ले रहे हेतु उनमें अधिक आकर्षण देखा गया।

5- कलावर्ग की कक्षाओं में इस वर्ग के विद्यार्थियों की संख्या अधिक थी जबकि विज्ञान तथा कार्यों वर्ग में इनकी संख्या बहुत कम थी। यदापि उनकी पढ़ाई में अभिनवत अभित्वी थी तथा वे लगभग 4 चतुर्थे रेंज पढ़ते थे ऐसे विद्यार्थियों का लगभग 63.46% था। बहुत से विद्यार्थी ऐसे थे जिनके पास अध्ययन करने हेतु स्थान ही उपलब्ध नहीं था। 38 उपरोक्तवालों ने बताया कि उन्हें शिक्षा को दारा दिये जाने वाले व्याख्यान समस्याओं में परेशानी होती थी। 42 विद्यार्थी ऐसे थे जिन्हें कक्ष में अन्य समस्यायें उठानी पड़ती थी तथा 19 विद्यार्थियों को भाषा की समस्या थी।
6- उत्तरवादियों से लगभग 64.16% विधायिक ने पादरीहमी क्रियाओं में भाग लिया। इनकी सहभागिता जिलास्तर के कार्यक्रमों तक सीमित रही।

7- उनकी आकांक्षा तत्त्वात्मक उच्च 58.03% विधायिक परस्परस्वतः उपाध्ये प्राप्त करने की आकांक्षा रखते थे जबकि 19.86% व्यावसायिक पादरीहमी का अध्ययन करना चाहते थे। ऐसे विधायिक जो व्यावसायिक पादरीहमी का अध्ययन करना चाहते थे उनके पारंपरिक बिना पढ़े सिखे अवधारणा कम साक्षरता प्राप्त थे।

8- लगभग 15.21% विधायी दो अपना तीन अखबार पढ़ते थे जिनमें केवल अखबार अधिक पढ़े जाते थे। अंग्रेज़ी अखबार पढ़ने वाले विधायी केवल 7.58% थे। 23.1% लोग किसी न किसी राजनीतिक पार्टी से प्रभावित थे जिनमें 41.25 लोग राष्ट्रीय स्तर के नेताओं से प्रभावित थे जबकि 25.9% लोग अनुभूति जाति के नेताओं से प्रभावित थे।

9- 79.8% अनुभूति जाति के लोगों का सामान्य स्तर उच्च था यथापौर्व सभी जातियों की तुलना में वह काफी निम्न था। लगभग 15.06% लोग ऐसे थे जो सरकार की आरक्षणीति से सहमत नहीं थे। वे लोग आरक्षण के लाभ को ज्यादा तो समझते थे परन्तु उपलब्ध सुविधाओं से संतुष्ट नहीं थे। ऐसे लोगों की संख्या शहरी क्षेत्रों में ज्यादा थी।

10- ऐसे विधायी जो छात्रावासों में रह रहे थे उनकी शैक्षिक आकांक्षा का स्तर काफी ऊँचा था तथा वे अच्छे व्यक्तिगत चुनने के प्रावधार सत्तिए भी थे वह अखबारों तथा राजनीति के प्रावधार सत्तिए तो वे परन्तु विशेष भी प्रकार से संक्रिय राजनीति से जुड़ना पसंद नहीं करते थे।
11- 15 माहेलाओं के न्यायरूप से 8 ने अपना शैक्षक कैरियर स्थायी ही तय किया जबके शेष ने अनुभव किया कि अनुस्मृति जाते का होने के कारण वे अपने सहपातियों के व्यवहार में परेक्षण नहीं ला सकती।

12- प्रथानािया तथा 58 शिक्षकों का साझेदारी लिया गया जिनमें से अधिकांश का यही मत था कि अनुस्मृति जाते के विद्यार्थियों का बौद्धिक स्तर अन्यथांत्र निम्न स्तर का था। दूसरी ओर 25.8% लोगों ने आरक्षण का अनावश्यक तथा व्यर्थ किया।

20- सोमन, एन.ई. 74 [1976] "ए स्टडी ऑफ मेमोरी"

उद्देश्य: - इस शोध ग्रन्थ में संस्कृत साहित्य तथा संस्कृति के परिपक्व में स्मृति सम्बन्धी विशेषताओं का प्रयोग का विवरण प्रस्तुत किया जाना है उद्देश्य निधारित किया गया है।

शोधकीय: - शोध विषय चार भागों में विभाज्य किया गया है। यह निम्नलिखित बताये गये हैं -

1] रोट स्मृति 2] साधारण स्मृति 3] मेटेडरेशनस्मृति 4] रिलॉक्सन ऑफ एमेमोरी इन मेटा फाॅक्स

निष्पक्ष :-

स्मृति की संस्कृति मात्र ही सीखने की प्रक्रिया नहीं है बल्कि रहन सहन की कला स्मृति को प्रभावित करती है।

21- नमी, ए.पी.-और कन्न कला 65 [1977] मार्च , "दि एफेक्ट ऑफ सेक्स, एन एप्सेंट प्रोफेसन ऑफ दि एजीप्यूट ऑफ चिल्ड्रन टुवर्क स्कूल प्रोग्राम"  

न्यायरूप:-

225 विद्यार्थी 105 बालक 120 बालिकाओं को शोकार्य हेतु चुना गया [नीकरी
पेशा वर्ग से 110 तथा व्यापारी वर्ग से 115 छात्रों का चयन किया गया।

शोध किये-

उपकरण- स्कूल प्रोग्राम के माध्यम से लिखावें शिक्षा की तरह की एंटरप्राइज़ तैयार की गयी।

अंकनों का विश्लेषण- मीन एस.टि. तथा एनालिसिस अफ ब्यर्जन्स से सम्बन्धित

साइटस का प्रयोग किया गया।

निष्कर्ष-

1- तीर्थ्री पेशा वर्ग के विद्यार्थियों की आंबाबुटेट का महत्वाचल व्यापारायक वर्ग के

विद्यार्थियों से ज्यादा पाए गए।

2- विभिन्न कक्षाओं में दोनों लिंगों के विद्यार्थियों पर उनके मान-परिता के व्यवसाय

की छत्र रणस्तव्य द्रुत दृष्टेदार हुई।

3- पुरुष और महिला दोनों वर्ग में आयु तथा व्यवसाय का आस्तीन सहस्मनंध 1.01

स्तर पर विश्लेषणीय पाई गई।

4- लिंग तथा कक्षा दोनों का अलग अलग मूल्यांकन करने पर कक्षा 9 के विद्यार्थियों

में लड़के तथा लड़कियों के अन्य सफलता काफी अलगाव पाए गए।

22- आचार्य, एस.टि. बी. जी[1978]-

'ए ब्यर्जेंस ऑफ दि रिलेशनशिप एजेंस, क्रिस्टेटेव बिबिसेम्सः, इंटरनेट्स एण्ड स्कूल

एचीमेन्ट'

उद्देश्य-

रेम्बर न्यायदर्श | की द्वारा 400 नगरीय हिंदी विद्यार्थियों । 200 बालक और 200
लड़ाक्यों का चयन किया गया था जिनमें शोध हेतु एक वर्तन स्कूलों का चयन आन्ध्रप्रदेश के पारे चीनी गोदावरी जिले से किया गया।

उपकरण - टी.टी.सी.टी., कैल्स कल्चर पेयर इन्टेलिजेंस टेस्ट, शाब्दिक उपलब्धि का मापन करने हेतु कक्षा में पांच विषयों में विचारात्मक द्वारा प्राप्त अंकों को आधार बनाया गया था।

शोधकंप्यूटर - सह सम्बन्ध तथा फेक्टोरियल 7×3 क्रिष्णामय का प्रयोग किया गया।

निष्कर्ष-

1. लिंग के आधार पर बुद्धि, उपलब्धि तथा क्रिष्णामय सम्बन्ध कोई भी उल्लोह तेल गू सामाजिक विज्ञान तथा समाजीय विज्ञान के मध्य नहीं पाया गया।

2. शाब्दिक क्रिष्णामय सम्बन्ध परिक्षण के अन्तर्गत अंग्रेजी तथा गणित के मध्य विचारात्मक स्तर वालिकाओं के पथ में गया था।

3. जेटिजेस-जेक्सन का प्रभाव उच्च तथा निम्न वर्गों में बुद्धि एवं शाब्दिक क्रिष्णामय से मध्य देखा गया जिसमें आपत्ति सह सम्बन्ध पाया गया है।

4. उच्च बुद्धि और उच्च शाब्दिक क्रिष्णामय वर्गों के बीच उपलब्धि का स्तर विचारात्मक विषयों में काफी उच्च पाया गया।

23. मुल्ता एल.पी. 24 जुलाई 1978 'ए स्टैडी ओफ दि परिचय साइकेटिस्ट्स एण्ड ऐनाइमिक एक्सचेंज ओफ विडिओल रॉक एण्ड वेकवर्ड ब्लास्ट स्ट्रॉजास्ट ओफ मेटर स्टीविस्टो।'

उद्देश्य-

1. दिक्की तथा परस्नातक स्तर के अनुसूचित जाति तथा पिछड़ी जाति के विचारात्मक के मध्य बुद्धि के आधार पर विचारात्मक क्षमताओं का अध्ययन करना।
2- सामान्य, पिछड़ी जाति तथा अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के मध्य शैक्षिक
उपलब्धियों का अध्ययन।

न्यायार्थ-
-
मेंठ वि.वि. से सम्बन्ध है महाविद्यालयों का चयन किया गया। ऑफिड़ो का
एकरांकण मीनानी परसनलिटी इन्टरनरी, भटनागर सेलफ कन्सेंट्र इन्टेंटरी तथा रेक्स
स्टैंडर्ड प्रोग्रेसेव मेट्रिक्स एण्ड कुमुलेटिव रिकॉर्ड कार्ड द्वारा किये गये।

ऑफिड़ो का विशेषक्रम में 'डी टेस्ट' का प्रयोग किया गया।

निष्कर्ष-
-
1- परस्तरीका स्तर पर अनुसूचित जाति तथा जनजाति के विद्यार्थियों ने काफी
उपलब्धि प्राप्त की परतु उनमें अन्तर आत्मगति भावना पायी गयी।

2- सामान्य जाति के परस्तरीका विद्यार्थी अधिक प्रभावशाली, उत्साही तथा उनका
व्यक्तित्व अधिक आत्मविश्वास पूर्ण था।

3- परस्तरीका स्तर पर अनुसूचित जाति के विद्यार्थी अधिक आत्मविश्वासी तथा अधिक
उपलब्धि प्राप्त करने वालों में से थे।

4- स्नातक स्तर पर पिछड़ी जाति के विद्यार्थी, सामान्य जाति के विद्यार्थियों से अधिक
कुशल, आत्मविश्वासी पाये गये।

5- परस्तरीका स्तर पर पिछड़ी जाति के विद्यार्थियों का बौद्धिक स्तर अनुसूचित जाति
के सापेक्ष कुछ अधिक अच्छा पाया गया।

6- स्वायत्तता तथा सम्बद्धता की दृष्टि से अनुसूचित जाति जाति के स्नातक तथा
परस्तरीका विद्यार्थी ओशत दर्जे के पाये गये।
7- अनुप्रेरण जानते के छात्रों की तुलना में सामान्य जानते के विद्यार्थी अधिक मैलसार अधिक विचारशील तथा सहनशील पाये गये।

24- पाण्डेय, वृक्षेन्द्र एण्ड शोलकन्दी, हनुम511978], "एन एक्सपेरिमेंटल ड्राईआउट ऑफ दे इंट्रेक्ट ऑफ इन्फ्रारेड लेवल ऑफ एत्याइडरेशन ऑफ एक्स्पीडे एनाउमेंट"।

क्षेत्र - सूरत

न्यायलर्स - 22 माहिला विद्यार्थी (11 एक्सपेरिमेंटल ग्रुप से तथा 11 कंट्रोलग्रुप से)

उपकरण - आकांक्षा स्तर के मापन हेतु गुणरात्री टेस्ट तथा देसाई, यह समूह जुड़ते परीक्षा तथा शिक्षक द्वारा मिलित विद्यालयी में भर शिक्षक का प्रयोग किया गया।

ऑफिसर का विवेकानंदलर्स - एक्सपेरिमेंटल ऑफ वेजरांग।

निष्ठता - आकांक्षा स्तर का विशेष उपलब्धि से सीखा समन्वय पाया गया।

25- सत्यवती, एम.के. 1978], "डिवलपमेंट ऑफ स्केल 2 एमजेर स्कूल एंड इंडस्ट्रीएड ट्रॉबल्टस देयर स्कूल एक्सपेरिमेंटलस"।

स्थान - गुजजारपुर

न्यायलर्स - 764 हाइस्कूल के विद्यार्थी

विषय - 45 प्रश्नों से युक्त प्रश्नावली जो विद्यालय अनुभव पर आधारित थी।

ऑफिसर का एक्जिक्युलर्स - सहायमान्यता।

निष्ठता - टेस्ट रीटेस्ट रिलायबलिटी .91 तथा वेलाडेटी .70 पायी गयी।

26- प्रसाद, दी. एण्ड हिंद, एन.एन531979],

कोरियोलस ऑफ मेमॉरी, विढ एन, रंगदक्षेण्य एण्ड इन्टेलीजेंस।
न्यायदर्श - 340 किलो - आयु - 20-45 वर्ष

विधे -

उपकरण- प्रौ.जी.आई. मेमोरी स्कॉर्न का प्रयोग किया गया। इसके उत्तरार्थ क्यू.ए.आई.एस के हिंदी अनुवाद का भी प्रयोग किया गया।

आक्रामक का विश्लेषण - सहस्रबन्ध

निष्कर्ष- प्रौ.जी.आई. मेमोरी स्कॉर्न का ऋणाल्पक सब सम्बन्ध पाया गया। आयु तथा शिक्षा के मध्य (0.36-0.74) था। प्रौ.जी.आई.स्त्वती स्कॉर्न शाब्दिक तथा क्रियाशील शौचालय अंक के 0.22 से 0.55 के मध्य थे।

27- जमी. एमः.सी.67 [1979] "ए साइकोलॉजिकल स्टडी ऑफ़ एडजस्टमेंट प्रोब्लम्स ऑफ़ हारिजन्स शिखरक्षेत्र एंड वेफर्ड क्लास स्ट्रॅटेंस ऑफ़ आग्रा डिस्ट्रिक्ट ".

उद्देश्य -

1- हारिजन, अनुसूचित जाति, पिछड़ी जाति की दशा वर्ष 1965 में अल्पत में अवधि अवस्था रही गई जबकि उच्च वर्ग के विद्यार्थियों की दशा अत्यधिक संतोषजनक थी।

2- वर्ष 1977 में दोनों वर्गों, हारिजन, अनुसूचित जाति तथा पिछड़ी जातियों के मध्य आपसी सामाजिक संबंध में काफी सुधार हुआ।

3- सामाजिक करने में वैयक्तिक आधार पर स्थापित सम्बन्धों का कोई प्रभाव देखने को नहीं मिला।

4- नगरीय क्षेत्र के विभिन्न वर्गों के विद्यार्थियों में अपसी सामाजिक अधिक पाया गया जबकि ग्रामीण क्षेत्र के विभिन्न वर्गों के मध्य आपसी सामाजिक बहुत कम था।

5- सामाजिक वर्ग तथा अनुसूचित जाति वर्ग के लोगों के मध्य उल्लेखनीय अन्तर पाया गया।
28- दिग्न, दी. एस. 20 [1980],” पंजाब शासक इलाके और बंद एम्बुलेंस शिपर्स कास्ट, ए केस स्टर्ड इन 12 पंजाब "

उद्देश्य-
- - - - - - - -
1. पंजाब प्रान्त में सामान्य वर्ग तथा अनुसूचित जाति के विद्वानों के गठबंधन शैक्षिक संस्था अंतर्गत जाता करना।
2. अनुसूचित जाति वर्ग के विद्वानों में शैक्षिक विकास की गोते मन्द होने के बारे में जानकारी करना।
3. अनुसूचित जाति वर्ग के विभिन्न समूहों में ही शैक्षिक असमानता का अध्ययन करना।

न्यायत्त्व और उपकरण -
- - - - - - - - - -

वर्ष 1961 से 1971 के मध्य पंजाब राज्य की सियासत के अनुसार न्यायत्त्व का चुनाव किया गया। कुल अनुसूचित जाति की जनसंख्या का 94.15% न्यायत्त्व में सम्मानित किया गया।

यह ऑफ़िस, पंजाब शिशु विभाग के वार्षिकी से एक चरण गया था।

निष्कर्ष-
- - - - - - - -
1. शोध से यह निष्कर्ष निकला कि अनुसूचित जाति तथा शेष समाज की बीच शैक्षिक असमानता का कारण लम्बे समय से उन दोनों के बीच समाजिक आर्थिक स्तर के असमानता ही है।
2. यदि अनुसूचित जाति तथा शेष समाज के बीच असमानता है परंतु सबसे ज्यादा अनुसूचित जाति के बीच असमानता है।
3. शैक्षिक असमानता सामान्य तथा अनुसूचित जाति में तो भी है साथ ही समाज के विभिन्न स्तरों के समान, तथा क्षेत्र के कारण विभाजित है, असमानता का प्रमुख कारण है।
4- सामाजिक आर्थिक स्तर तथा व्यावसायिक स्तर भी शैक्षिक असमानता हेतु आपस में सहसम्बन्धित पाये गये।

29- जोशी, एस. जी. 26[1980]। प्रूफशेनल प्रोब्लम्स ऑफ दे शिक्षूवल्ड कास्ट एण्ड शिक्षूवल्ड ट्राइड्स ऑफ बड़ोडा हिस्ट्रियोग्राफ्ट'।

उद्देश्य :-

सामाजिक आर्थिक और शैक्षिक कारणों के पारंपरिक में अनुशुष्कित जाते तथा अनुशुष्कित जनजाती के विद्यार्थियों की समस्याओं का अध्ययन करना।

लक्ष्य :-

1- सामाजिक आर्थिक पर्यावरण के पारंपरिक में अनुशुष्कित जाते तथा अनुशुष्कित जनजाती के विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याओं का अध्ययन।

2- ऐसे विद्यार्थियों के आकृष्ट स्तर तथा विद्यालय से उनके विकासकालों तथा उपलब्धियों का अध्ययन।

3- माता-पिता और शिक्षकों का उनकी शिक्षा के प्रारंभ कोण।

न्यायन - 495 हाईस्कुल स्तर के विद्यार्थी 108 कालेज स्तर के विद्यार्थी तथा समान संख्या में माता-पिता को चुना गया जिनमें 111 तथा 164 विद्यार्थी क्रमशः अनुशुष्कित जाते तथा अनुशुष्कित जनजाती के बे।

उपकरण- विद्यार्थियों, शिक्षकों तथा आभासवकों के लिये अलग-अलग प्रश्नावली का निर्माण किया गया जिसमें, सामाजिक आर्थिक, मनोवैज्ञानिक तथा शैक्षिक अक्षारादेश सम्बन्धित प्रश्नों को समाहित किया गया।
निष्कर्ष-

1- 82% विद्यार्थियों के पिता साक्षात ही नहीं थे अथवा कक्षा 4 तक ही शिक्षा प्राप्त थे।

2- 95% लोग किसान थे अथवा भूमिहीन भूज्यों थे।

3- 95% माता में विवक्तल अनपढ़ थी।

4- 65% माता-पिता अपने बच्चों के भरणपौष्प ही नहीं कर पाते थे अतः शिक्षा के प्रारंभ उनका कोई लगाव अपने बच्चों हेतु नहीं था।

5- बच्चों का प्रशिक्षण स्तर अत्याधुनिक निम्न होने के कारण उनके माता-पिता का अपने बच्चों के प्रारंभ कोई लाभ नहीं दिखाई।

6- अनुसंधान अनुसंधान जारी तथा अनुसंधान जनजाति के विद्यार्थियों से प्रविष्ट रखते हैं जिसके कारण उन्हें निम्न स्तर का व्यवसाय सुनाते हैं।

30- सनी, वि. 58 (1980)। "सेर्फ कस्टंट एण्ड अन्दर नॉन कॅमोन्ट पॉक्ट एफ-फाइटिंग १४ एकेडेमिक एचोफेंट ऑफ, दे शिक्षा एक्सट्रॉक्ट स्ट्रेटेज्स इन हेंड्स एव्ह्यूवेस्ट फॉर डायर टेक्नीकल एक्स्केन्ज।"

परेक्लॉपना - अनुसंधान जारी तथा अनुसंधान जनजाति के विद्यार्थियों की प्रशिक्षण उपलब्धियों में कोई उल्लेखनीय अन्तर नहीं है।

न्यायदर्श- सात (60) अनुसंधान जारी तथा अनुसंधान जनजाति के विद्यार्थी तथा इतनी ही संख्या में सामान्य जारी के विद्यार्थी।

उपकरण- ऑफिस के एकीकरण हेतु अनुसंधानकार्य द्वारा भविष्य एक प्रश्नावली का निर्माण किया पर समन्बित पृष्ठभूमि जानने हेतु एक अलग प्रश्नावली का निर्माण किया। ग्रेड के आधार पर चीनी सेस्टर के अन्त में प्रश्नावली का मूल्यांकन किया गया।
विख्यातः

रॉकेट का एक्सक्रैक्शन 'टी'-पररक्षण तथा प्रोटेक्ट गुवमेंट केबल द्वारा किया गया।

लेखकः

1.- अनुसूचित जाने के बच्चों का शैक्षणिक उपलब्धि का स्तर सामान्य और बिधायतों से नया था।

2.- अनुसूचित जाने के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि, शैक्षणिक संस्थाओं की गुणवत्ता पर निर्भर थी।

31.- अल्पन, एन.एस. [1981] - ए स्टॉरी ऑफ़ दे फिनल्यांड इनस्ट्रूसार्स दे एचवेक्सन ऑफ़ नाइंटेर्स VII स्टॉरीएंड विलोगेंग दू शिङ्गुअल-फाल्स एणड शिङ्गुअल ड्राईवर्स द्रूज मार्वेडोम ऑफ़ इन्स्ट्रूसार्स इज़ कनाडा।"

उद्देश्यः

1.- कक्षा 6 में अध्ययनपत्र अनुसूचित जाने तथा अनुसूचित जनजाति की शैक्षक उपलब्धियों का सामान्य जनसंख्या से तुलना।

2.- अनुसूचित जाने तथा अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों में जाने के आधार पर, स्थान के आधार पर तथा लिंग के आधार पर शैक्षिक उपलब्धियों का अध्ययन करना।

3.- अनुसूचित जाने तथा अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों में बुद्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि के बीच सम्बन्ध ज्ञात करना।

4.- अनुसूचित जाने तथा अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धियों के बीच बच्चे तथा तरीकों के प्रभाव का अध्ययन करना।

न्यायार्थः

कनाड़ के प्रधान की 21 शैक्षिक संस्थाओं में कक्षा 7 में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों को चुना गया।
उपकरण- चेतरी उपलब्धि परीक्षण तैयार एवं स्तरीकृत किया गया तथा प्री-मल्या नाँन

वर्तभ गुप ओर्फ इंटरटीजनेटेट का प्रयोग विश्लेषणकीय स्तर जाने हेतु किया गया।

विधेय- 'टी' परीक्षण, तहसलवन्द गुणांक तथा स्टेपवाइज रिप्लेजन एनालितेस प्रयोग की गयी।

निष्कर्ष-

1- अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति के काशा 6 में अध्ययन करने वाले छात्रों

का स्तर समान वर्ग से लेन्न था।

2- ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों का स्तर नगरक्षेत्र के विद्यार्थियों की तुलना में काफी निम्न

था।

3- लड़कों की शैक्षिक उपलब्धि लड़कियों से अधिक थी।

32- रंगार्थि, प्र. बी. 1981। 'ोरंगावाद के अनुसूचित जाति और गैर अनुसूचित जाति

कालजों के विद्यार्थियों का तुलनात्मक अध्ययन।'

उद्देश्य-

1- अनुसूचित जाति और गैर अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों को स्व अध्यायार्थ,

स्वयंविभेदित संबंधों, व्यक्तित्व समायोजन, बुद्धि और शैक्षिक उपलब्धि के आधार

पर तुलना करना।

2- लिंग एवं नगरीय-ग्रामीण पृष्ठ भूमि के कारण भी तुलना की गई।

न्यायर- 197 विद्यार्थि, 676 अनुसूचित जाति के और 521 गैर अनुसूचित जाति के।

उपकरण- निर्णय संरचनात्मक प्रारूप का बुद्धि का अव्यक्तिक परीक्षण शैक्षिक उपयोग के लिए।

शोध- बुद्धि के आधार पर गैर अनुसूचित जाति विद्यार्थि अनुसूचित जाति विद्यार्थियों से

अच्छे हें और नगरीय ग्रामीणों से, लिंग भेद ध्यान देने योग्य नहीं थे।
2- शोधक उपलब्ध के आधार पर गैर अनुभूत जाते विद्वानी, अनुभूत जाते विद्वानी से अलग थे। अनुभूत जाते विद्वानों में छात्राओं ने छात्रों से अलग किया। जबकि गैर अनुभूत जाते विद्वानों के मध्य छात्रों ने छात्रों से अलग किया। नामांकन श्रेणी की अपेक्षा नगरीय श्रेणी के छात्रों ने अलग किया।

33- सिंह पल्लवी। 1981। "हिन्दू जाते और पढ़े लिखे हरिजनों की बुढ़े का तुलनात्मक अध्ययन।"

न्यायदर्श- भागलपुर विश्वविद्यालय के डिग्री कक्षाओं के 100 पुरुष हरिजन और 100 हिन्दू जाते के विद्वान।

किति- हरिजन और हिन्दू जाते के विद्वानों की योग्यता बुढ़े का निर्वाचन किया। प्रावर्त्योगता के आधार पर किया गया। चित्र व्यक्तियों, वस्तु संग्रह और प्रदर्शन उप पैमाना वेश्लाय व्यस्त बुढ़े पैमाना से।

प्रदल्ल विश्लेषण- माध्यम, प्रमाणपत्र विचार और 'टी' मान निकाला गया।

परिणाम- हरिजनों, की बुढ़े हिन्दू जाते के विद्वानों से कम पायी गयी। जे. फन्नार्डस।

34- उपक्रम, एच-सी। 1981। "कुमाऊँ हिल्स में अनुभूत जाते की समस्याओं।"

उद्देश्य-

1- कुमाऊँ क्षेत्र के अनुभूतों की प्रस्तुत परिस्थितियों का पता लगाना, और उन सामाजिक स्थितियों का उजागर करना जिनके कारण उच्च जाति में आदर्शश्रेणी व्यवहार उत्पन्न हुआ।

2- अनुभूत जातों के पिछड़ने के कारणों और कारकों का पता लगाना।

3- सरकारी कल्याण उपायों का प्रभाव।
4- अन्तर्जातिय संबंध को पुनः कायम की जाने के लिए सामाजिक संबंधों का निर्माण करना। और

5- कुमाऊँ हिल्स में अछूतों को ऊचा उठाने के लिये सामाजिक पोलिस और नीति निर्माण की गाइडलाइन बनाना।

न्यायालय- बहु अक्सर आजूबाजू संबंध संमिश्रण निदेशन विषय से 300 अछूतों का न्यायालय प्राप्त किया गया।

प्रणयार- 

1- अधिकतर हारेजन परेवार 74% प्राप्त में से अस्पताल थे।

2- बाल विवाह अभाव थी 29% परिवार का वयस्क 39% और वे से विवाह 26% अस्मात बाल थे।

3- हारेजनों का मांदेरों में प्रवेश निमित्त 59.33% दूसरी तरफ 57.33% इस कुराने से बचे थे।

4- शिक्षित व्यक्तियों के अपने माता-पिता की और अधिक पक्ष में दुसैं कोण रखते थे।

5- अछूतों का आकाश तर पोर्टफोलिया उच्च पाया गया। यहाँ तक तक शिक्षित माता-पिता में स्पष्ट है प्रशासनिक और व्यवस्थापिक क्षेत्रों के कार्यों को पसंद किया।

35- अनुश्रूप्त जाति के कार्यों विधायकों की संबंधत बुद्धि।

श्रेष्ठ- ओरंगाबाद।

न्यायालय- ओरंगाबाद के 7 बारेमा कार्यों के 1197 विषयों, 676 अनुश्रूप्त जाति, और 521 नैर अनुश्रूप्त जाति विधायक।
प्रदत्त विश्लेषण - माध्यम, प्रमाणिक विचारण, आकृतित कई स्थायर, 'टी' परीक्षण।

परिणाम - गैर अनु. जाते के एक बड़े समूह की बुझुंड लोद्ध वायु उच्च थी। तब अनु. जाते के विवाही सामाजिक आर्थिक रूप से नियंत्रित थे गैर अनु. जाते के समूहों ने वारेण्ट प्रशासन की उच्च स्थायर पदवी लिया। तुलसी और चतुर्थ में वारेण्ट शिक्षा कक्षाओं के कोई अंतर नहीं। I, II और V जब अनु.जाते और गैर अनु. जाते में विवाहों का उत्पादराज्य संग्रह और निवास क्षेत्र के आधार पर शहरीय और ग्रामीण क्षेत्र के पुल्लों के मध्य और शहरी रेट्रो संग्रह के बीच किया गया, गैर अनु.जाते के विवाहीयों का आई.न्यू. अनु. जाते के समूह से उच्च पाया गया। ग्रामीण और शहरी में कोई महत्वपूर्ण अंतर दिखाई नहीं पड़ा। अनुप्रभाब जाते के विवाहीयों को पौष्टिक और पर्यावरणवादियों उच्छता देने की प्रयास की आवश्यकता है।

36 - बेगम, एफ. और एच.पी. बेगम 1985, "शिक्षा के प्रातिविद्यार्थीं के दृष्टकोण से सम्बन्धित कारक।"

क्षेत्र - ढाका।

न्यायिक - 724 विद्यार्थी, 301 पुल्ल, 423 स्त्री विद्यार्थी ढाका शहर के विभेदन शैक्षिक संस्थानों से। ढाका शहर के विभेदन क्षेत्र के 116 गैर अनुजाते के बच्चों 76 पुल्लों और 40 गैर पुल्लों।

विषय - उपकरण - शिक्षा के प्रातिविद्यार्थी का अनुमान करने के लिए एक निर्देश टैप का प्रश्न।

प्रदत्त विश्लेषण - प्रसारण विश्लेषण, शास्त्रीय मान।
परेशान - शिक्षक तरंग और पिता के शिक्षक के अनुसार विद्यार्थियों का द्रुष्टकोण में महत्वपूर्ण अंतर है। विश्वविद्यालय तरंग की अपेक्षा स्कूल और कालेज के विद्यार्थियों का द्रुष्टकोण शिक्षा के पक्ष में अधिक था। माहौलों का द्रुष्टकोण पुरुषों की अपेक्षा अधिक पाया गया। उच्च शिक्षक वाले पिता के पुरुषों ने अधिक पक्ष में द्रुष्टकोण प्रस्तुत किया। शताब्दीय नर्स को व्यक्तित्व प्राप्त किया गया। विद्यार्थियों का द्रुष्टकोण उनसे अधिक पक्ष में था जो विद्यार्थी नहीं हैं। - के वर्ण

37- हार्वर्ड गलेन, इंसटा निरामिश और दिनों थामस25] 1986] "पिशोरों के आकांक्षा तार से संबंधित कारण।"

न्यायदर्श - अनुसंधान कर्ताओं ने 60 अमेरिका भारतीय विश्वों [आयु 12-18] और 48 व्हाइट एमार्क्स विश्वों के आकांक्षा तार पर सफलता, असफलता और आर्थिक प्रभावों का अध्ययन किया, जाल, लिंग श्रेणी, सेक्स स्टर्म और लोकस आफ कान्ट्रोल को स्वीकृत मोड़ चरी के रूप में माना गया।

परेशान आया कि एक महत्वपूर्ण निरालक आकांक्षा तार पर असफलता के कारण आयी। यह प्रभाव ज्ञानी हाई तार पर अधिक दिखा। सफलता और आर्थिक प्रभाव आकांक्षा तार को उच्च तार तक ले गये।

शोध ने यह निष्कर्ष दिया कि किशोर अपने जीवन और मैरियर लक्ष्य के निर्धारण में प्रयास रहा है, उनके उन क्षेत्रों में जहाँ कि वे असफल, रहे ऊंचे लक्ष्य स्थापित नहीं कर पाये।

38- इंडियन टी. एस. [1986] "बुद्ध और शिक्षक निष्पालित में जातिगत अंतर का अध्ययन।"

परिक्षण -

1- अनु. जाति, पिछड़े और सामाजिक वर्ग के छात्रों में बुद्ध की दुनिया से कोई
महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

2- अनु जाते, पिछड़े और सामान्य वर्ग के विद्यार्थी स्कूलों विषयों में छात्रों के प्रदर्शन में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

न्यायाधीश- पंजाब के अन्तर्गत और पौरी वोल्ट जिले के ग्रामीण क्षेत्रों के 12 भारीस्कूलों के क्लास विद्यार्थियों में से अध्ययन के लिए न्यायाधीश का चुनाव किया गया। एक समूह से केवल 15 वर्ष के आयु के बच्चों को लिया गया। जिनमें से 175 विद्यार्थी 88 लड़के और 87 लड़कियों सामान्य रूप से चुने गये।

प्रमुख परीक्षार्थी:

1. कैलेग का कल्पन पेयर इंटेलिजेंस टेस्ट [कैलेग-2]

2. विद्यालयी विषयों में शैक्षिक उपलब्धि ।

पाँच विद्यालयी विषयों में उपलब्धि का मापन, जैसे कि गणना, विज्ञान, अंग्रेजी, पंजाबी और हिंदी, स्कूल रिकॉर्ड से लिया गया। स्पष्ट लाभ के लिये प्रत्येक विषय को 'टी स्कोर' में बदल दिया गया।

प्रत्येक का संभावनात्मक विवरण - बुड्डी परीक्षा और पाँच विषयों के अध्ययन में भी अनु. जाते, पिछड़े और सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों के बीच प्रदर्शन के महत्वपूर्ण अंतर के परीक्षण के लिये अनोचा परी. का प्रयोग किया गया।

विद्यार्थियों के तीन समूहों के मध्य, [अनु. जाति, पिछड़े और सामान्य वर्ग] उनके बुड्डी परीक्षण के अनुसार और प्रदर्शन स्कूल के पाँच विषयों के आधार पर एफ-शेषयों 1.159 [बुड्डी] 0.81 [शारीरिक] 1.155 [विज्ञान], 635 [अंग्रेजी] 1.156 [पंजाबी] और 319 [हिंदी] में पाया गया। इसमें से केवल भी एफ. शेषयों का मान 0.05 स्टार पर सार्थक नहीं पाया गया। इससे स्पष्ट है कि यह तीनों समूह बुड्डी और शैक्षिक शिक्षा के सार्थक में भिन्न नहीं है।
परेढण - अभ्ययन के परणाम, यह प्रकाशित करते हैं कि अर्थी टर्क्क्राडेटोर्या के प्रवेण का निम्नपरण का खालीपन और परिक्षा उद्देश्य अनु. जाते के संदर्भ में है।

इसलिए यह निष्कर्ष निकलता है कि अनु.जाते और पिछड़े जाते के विद्यार्थी
किसी भी प्राकार से सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों से निम्न नहीं है। अतः प्रवेश और परिक्षा
उद्देश्य के संदर्भ में इन जातियों के शैक्षणिक स्तर में निरन्तर साधारण रूप से इनको अन्य
जातियों की तुलना में निम्न रेंज का बताने का उपन लगाना है जिससे अन्य लोगों में छूटा
और डालना विवेकत्त हो रहा है उन्हें जिस तीन की वातव में आवश्यकता है कि उन्हें-
आम्रोपण और व्यावहारिक पर्याप्तता अभ्ययन के लिए प्रदान किया जाय।

39- मेहटा, प्रभा और कुमार बिलौप [1988] 'शैक्षिक निम्नवत्त का बुझा व्यावहारिक,
समायोगन, अभ्ययन की आवश्यकता और शैक्षणिक आम्रोपण से संबंध।"

न्यायर्थ - 60 गुण और 60 स्त्रोत परस्पर निर्देशित विद्यार्थियों को लिया गया।

खिये - उपकरण द्वा आईसी परस्पर निम्नलिखित इन्क्रेंटें, एच.डी. कार्सर द्वारा निर्मित स्टडी संवे-

[1958] एवं. जनोटा द्वारा निर्मित एक सामान्य समृद्ध मानसिक योग्यता परिक्षण।

परेढण - परेढण में यह बताया कि बुझा के रूप में मनोविज्ञानिक चर संबंधित नहीं है।
और उपलब्ध में स्वतंत्र ही स्वतंत्र चरों के मूल्य के अनुसार से ही कोई संबंध की क्रमशेषता ही।

49- श्रीवास्तव, आर.के. और बी. रक्त, [1993], 'एटीट्रूट आफ हरिजन बूम मान टून्सर्स"
एजुकेशन, ए कम्पॉटेन्ट स्टडी ऑफ ए सिटी एण्ड इस्ट सराउन्डिंग विलेजेज"

क्षेत - गढ्वाल

खिये - प्रमाणाथी 2X2 पैटर्नोरेक्शन डिजाइन प्रयोग की गयी।

ऑफर्ड का एकजीरण - कई स्क्व्यूयर टेस्ट।
लेखक-र-ः-

1. नगर क्षेत्र में रहने वाली हरेजन माहिलाओं की अभिशृङ्ख्लित शिक्षा के प्रति लक्षणमय श्री जवाहर ग्रामीण क्षेत्र की माहिलाओं में अभिशृङ्खलित शिक्षा के प्रति कम थी।

उपरोक्त के आंकदेखिए निम्न शीर्षकों पर भी पी.एच.डी. उपाधि हेतु रोधकार्य किये सके हैं।

41- ओम प्रकाश [1981] "ग्रामीण क्षेत्रों में हिन्दू और अनु.जाति के बच्चों के मध्य कुछ मनो सामाजिक चरों का अभ्यास।"

42- प्रिया एल.सी. [1981] "तमिलनाडु के स्कूलों में अभाव ग्रुप समूहों के विद्यार्थियों में शिक्षा के लिये आंकका का अभ्यास।"

43- जया राजपूत [1981] "स्वास्थ्यावरण, आंककशत्तर और मानसिक स्वास्थ्य शीर्षक नियुत्ति के कारकों के रूप में।"

44- यादव, पू.के. [1981] "अनुशुेष्ट जाति की उनकी शीर्षक प्रशासन की योजना के बारे में जागरूकता का अभ्यास।"